Discussion on Vichar Samiti in Trust Meet on 18/03/26

Summary:

1. Trust Deed requires *three* ex officio members - President, Coordinator, Treasurer - of the Samiti, *plus at least three* other Samiti members, *plus at least five* members who are not members of the Samiti.
2. Trust Deed sets following terms: i) work to keep the Knowledge Question alive before the Ashram in all its breadth and depth, ii) take the ideas and dialogues in the Ashram to national and international fora, and iii) further the necessary theoretical enterprise.
3. Make the Samiti wide-based. Deed sets only a minimum number for membership. Non-VA members should acknowledge importance of the Knowledge Question in future social transformation and the responsibility placed on them by the terms of the Deed.
4. Work of Vichar Samiti may be conceived as an extension of Lokavidya Debates as well as Bahujan Gyan Vimarsh. We need people here who have been part of Bahujan Gyan Vimarsh, and Bahujan Gyan Samvad. Those inputs must come to the Samiti.
5. Individuals from movements working with ground level activities related to life and living in the context of knowledge and justice (Ex. Climate justice) may be considered. Mutual exchange of ideas in the Samiti will benefit both.
6. This Samiti is not limiting with whom one can have a dialogue. So even if Samiti is not very large, it can have dialogue with everybody who is willing to contribute. Identification of non-VA members is a pre-requisite before one can start constituting the Samiti.
7. The discussion for constitution of the Samiti may be centered around i) the task of creating a Knowledge – Politics dialogue in different languages that we have set ourselves, and ii) the task of creating a global dialogue on the Knowledge Question, which also we have set ourselves. We may have subsets of the Samiti who work toward each of these tasks.
8. Finally, the numbers to start with should be decided as well as a list of non-VA individuals to choose from should be prepared.

Part of transcript of VA Trust Meeting relating to Discussion on Vichar Samiti

Girish Sahasrabudhe:

Let us talk a little bit about this. There is this, like I had said in the Executive Meeting that, with these changes in the VA Office it makes sense to activate a Committee, which we have not constituted earlier... till now, that is, and which is provided for in the in the Trust Deed. विचार समिति इसका नाम है, और इसका जो स्ट्रक्चर है वो ऐसा है कि तीनों जो Office bearers हैं – President, Coordinator, Treasurer - ये तीनों इसके मेंबर होंगे. इसके अलावा कम से कम तीन मेंबर और विद्या आश्रम समिति के होने चाहिए, और कम से कम पांच मेंबर बाहर से होने चाहिए. ये नाम जो लिखे हुए हैं यहाँ इन चीजों को देख कर के लिखे हैं.

दूसरी चीज यह है कि यह ट्रस्ट डीड में जो विचार समिति के बारे में कहा हुआ है वो दो चीजें हैं. एक तो यह है कि जो ज्ञान का सवाल है – Knowledge Question - इसको अपनी पूरी गहराई में और व्यापकता में - the words used are breadth and depth in the English Version - इसको जिंदा रखने के लिए अपनी पूरी व्यापकता में और अपनी पूरी गहराई में - To keep this. Knowledge Question alive... And take it to the national and the international fora - the VA thought and the Knowledge. Question. That is one of the responsibilities, or expectations from the विचार समिति. And the second part here is specifically related to the fifth point in the Program. So, it makes sense to form this Committee, which is already entrusted with this responsibility. So, take the debate to the national and international for a is one part. The second part of responsibility of this Committee is to further the necessary theoretical enterprise for doing this. मतलब, इसका लगातार एक सैद्धांतिक स्तर पर इस सवाल को लगातार फॉर्मूलेट करते रहे, लगातार इसके बारे में सैद्धांतिक स्तर पर भी बातचीत करते रहे, यह इसका दूसरा उद्देश्य है, यह इस समिति का. Ok. So, that is it in the Deed... the gist of it that नॉलेज क्वेश्चन को सेंटर में रखते हुए लगातार इसको एक सैद्धांतिक स्तर पर लिखा जाए, और प्रस्थापित किया जाए. यह उसका दूसरा उद्देश्य है विचार समिति का, और ये दोनों चीजें हम जैसे पहली चीज जो है वो पांचवा जो मुद्दा है कार्यक्रम में उससे सीधे संबंध रखती है. और हम लोगों ने जितनी बहस की है लगातार... चली है ऑनलाइन बहस लोकविद्या डिबेट में, और विद्या आश्रम पर वास्तविक प्रक्रिया में, वास्तविक कार्यक्रम में, और बहुजन ज्ञान संवाद और बहुजन ज्ञान विमर्श के कार्यक्रमों में जो बात लगातार उठती रही है, वह यह है कि लोकविद्या के इस पर एक लगातार सैद्धांतिक दृष्टि से दृष्टिकोण बना रहे, जिसके चलते बहुजन दर्शन के बात हम लोगों ने शुरू की. तो दोनों चीजें संबंध रखती है विचार समिति से - कार्यक्रम के मुद्दे और हमारा, जो है, देश विद्याश्रम का? उससे तो, इसलिए, और संगठन? कारण भी इसमें जुड़ते हैं। जो इस विचार समिति की आवश्यकता को? को उजागर कर रहे हैं, ऐसा मैं मानता हूं.

तो इसको हमें बनाना चाहिए। और इसको जितना व्यापक हो सके, उतना व्यापक बनाना चाहिए। यह समझ करके ही यह सारे नाम इसमें लिखे गए हैं। तो यह सबको ये चीज भेजेंगे. मैं समझता हूं कि इसमें शायद अंतिम निर्णय आज न हो पाए. अगर हो सकता है, तो बाकी लोग इस पर अपना विचार दें लेकिन अगर इस पर. इसका जो पूरा... इसके सारे सदस्य हम पूरे... मतलब पूरी समिति आज तय कर पाएंगे, यह शायद नहीं होगा. जैसे, अब इसमें यहां पर...

बारह तेरह नाम यहां लिखे हैं... इसमें कम से कम तीन इनमें से चाहिए. और यहां भी काफी हैं... दस-एक नाम हैं... जिसमें, से कुछ पर अभी बात भी करनी बात भी करनी होगी... उनसे बात करनी होगी, और इसमें से सबको लेना है, या पांच लेना है, या सात लेना है, आठ लेना है, या यहां पर आठ लेना है, नौ लेना है, या सबका रहना अच्छा होगा... इसके बारे में हम अभी बात कर लें, ऐसा मेरा सुझाव है. और सदस्य हम तय करें वह तय करने की प्रक्रिया आगे कैसी होगी? क्या हम कार्यकारिणी को यह जिम्मेदारी दे देंगे? या आपसी विमर्श चलता रहेगा. ऑनलाइन समिति के सदस्यों में कुछ तय कर सकते हैं इसमें से. लेकिन मेरा सुझाव यह है कि सदस्यों की लिस्ट अभी फाइनल न हो, यह तय हो कि उसमें से कितने लोग होने चाहिए... सब होने चाहिए... व्यापक पूरी बनानी चाहिए। इन मुद्दों पर बातचीत हो जाए पूरी... आज हो, जाए तो ठीक रहेगा, ऐसा मैं मानता हूं. ठीक है, अगर यह मोटा-मोटा ठीक है, तो, यह शेयर यह हटा सकता हूं मैं इस पर से. सुरेश?

Vichar Samiti: [3+at least 3+5] to be constituted from the following (to which more names could be added):	
Ex-Officio Girish Sahasrabudhe Lakshman Mitra Abhijit Mitra **Vidya Ashram** [at least 3] B Krishnarajulu Chitra Sahasrabudhey Sunil Sahasrabudhey Avinash Jha J K Suresh G Sivaramakrishnan Naresh Sharma Krishna Gandhi Amit Basole Vijay Jawandhia Ehsan Ali Mohan Rao Mancherla Awdhesh Dwivedi	**non-Vidya Ashram** [at least 5] Fazalurrahaman Ansari Ramjanam Parmita Jiten Nandi Sasikant Anantachari Sasidharan Jasveer Singh Ramji Yadav Aparna Ekta Shekhar ?Barun Mitra ??from Movements?

jksuresh:

किसी... आपका जो ओपिनियन है आपकी तरफ, से आपकी राय थोडा बोलिए ना, नरेश, जी?

Naresh Kumar Sharma:

I agree with Girish. नाम काफी ज्यादा है इसमें और ज्यादा रखने में समस्या नहीं है. लेकिन अगर इसमें विचार... मीटिंग में ज्यादा समय लगेगा तो बाद में कर सकते हैं. मेरा सुझाव यह है कि जो आपने बनाया है यह सबको शेयर कर लीजिए. बाकी लोगों से बात करने में जिसमें ये सारे नाम है... उनको यहां पर जितने भी लोग हैं नहीं उनमें शेयर कर लीजिए उनमें से कोई कहना चाहे तो एग्जीक्यूटिव आसानी हो जाएगी. एकेडमी में कौन रहना चाहिए? हम बाद में शामिल रहे हैं, तो प्रश्न नहीं उठता है बिना समिति बनाए विचार की प्रक्रिया में शामिल रहे ना कहना तो बड़ा ही

बेतुका हो जाएगा। लेकिन ज्यादा है विचार समिति. देख लीजिए मेरे हिसाब से कैसे कर सकता है विचार की प्रक्रिया में शामिल? एक प्रश्न को शेयर कर लीजिए आप। सबके साथ बाद में

Abhijit Mitra:

I, I had an idea. I am not sure how justified how good, it is. But I just want to... because it struck me that यह है कि विचार समिति हमें जो... जिन लोगों को शामिल हम कर सकते हैं, तो उनके साथ हम लोगों की जो बातचीत होगी... तो, हम यह भी एक्सपेक्ट करते हैं, कुछ अलग-अलग दृष्टिकोण से? कुछ इनपुट्स हमें मिले. और हमारे जो लोकविद्या का दृष्टिकोण है, यह भी उन लोगों के काम में कोई दूसरा आयाम जोड़ पाए. और एक उसका तरीका यह हो सकता है कि अगर हम लोग ऐसे ग्रुप,. जो बहुत सारे हैं, जिनको identify करने की कोशिश करें...

We should try to identify groups carrying out ground level activities directed towards different aspects of life and living in the context of knowledge and justice: Climate, Environment and nature - (Jal-Jangal-Jameen), Natural farming including seed conservation, Rivers and water bodies conservation, Adivasis, Sant Parampara and Social justice in the larger sense, Art and Craft, Performing arts, Health, Education (Bhaichara Vidyalaya), Local markets and so on. The idea is to bring into the fold different groups which are not stuck within the purview of development, democracy and science."

In some parts, the transcript is not proper. Please correct if possible.

Girish Sahasrabudhe:

जी मैं थोड़ा यह कहना चाहूंगा इसमें कि यह समिति जो है, यह ट्रस्ट में कुछ विशिष्ट विचार से बनी है और उनके उद्देश्य जो है वो कुछ स्पष्ट लिखे हुए हैं. तो हम नए लोगों को जब लाते हैं विद्या आश्रम के तो लोगों से कोई बात नहीं... क्योंकि वो तो सदस्य हैं, वो तो विचार से वाकिफ है और मानते हैं लेकिन बाहर से जो लोग उसमें आ सकते हैं और जो इसके उद्देश्य है, उसमें कुछ उनका अर्थपूर्ण इसमें यह भागीदारी हो उनकी तो शायद उनको वाकिफ होना पड़ेगा इन उद्देश्यों के साथ. तो हम उसके बारे में थोडी बात करने जैसे जैसे नॉलेज क्रेश्चन है...

Abhijit Mitra:

Naturally... हां, हां...

Girish Sahasrabudhe:

क्या वो... नॉलेज क्रेश्चन को सेंट्रल ना मानते हो पहले ही... लेकिन क्या वह उसको काफी महत्व देते हैं आगे के परिवर्तन की प्रक्रिया में? क्या वो समझते हैं कि यह क्रेश्चन... इसको एड्रेस किया जाना चाहिए... शायद इसमें यह नहीं हो सकता कि वो अगर यह समझते हैं कि यह तो कुछ अलग चीज है या एकेडमिक चीज है... या सिर्फ ... तो पता नहीं... मतलब वो इसमें कंट्रीब्यूट कर पायेंगे... ऐसा मैं समझ रहा हूं...

Abhijit Mitra:

नहीं नहीं, Naturally, Naturally, हम जब कर रहे हैं, तो यह सारी चीज तो देखना ही पड़ेगा। यह तो देखना ही पड़ेगा। इसमें कोई दो राय नहीं है।

Girish Sahasrabudhe:

नहीं नहीं, वो बहुत सीधा नहीं है... देखिए बाकी के लोगों को जब आना है, तो उसको ठीक से फॉर्मूलेट करना पडेगा कि बाहर के लोगों को बोलने से पहले हमको क्या तय करना होगा, इसके बारे में थोड़ी बातचीत हो जाए... और संख्या के बारे में भी हो जाए यह तो शायद कुछ यह काम करने में सुविधा होगी आगे. मतलब ये क्योंकि, मैं इसलिए कह रहा हूं कि आज यह पूरी बना पाएंगे हम लोग ऐसा मुझे लगता नहीं. उसको या फिर कुछ कमेटी बन जाए, उसमें ऐड हो जाएगा बाद में यह हो सकता है... यह तो संभव है कि कमेटी आज हम बना लें... उस समिति को और उसमें बाद में ऐड करें. बाहर के लोग जो है, उनको पूछना पडेगा. यह लेकिन कमेटी तभी बना सकते हैं जब उसमें पांच लोग हम. बाहर के निश्चित कह सकते हैं कि आज हम ले सकते हैं. तो, ये कुछ चीजें हैं जो मतलब थोड़ी टेक्निकल हैं, थोड़ी विचार से संबंधित हैं.

Abhijit Mitra:

नहीं नहीं, ये। तो डेफिनिटली इसमें. कोई दो राय नहीं है जो आप, कह रहे हो उसमें कोई दो राय नहीं है. और मैं यही सोच रहा हूं कि मतलब ऐसे अगर... अगर हम खुला रखें, ऐसी जगह से अगर ले सकते हैं, फिर बातचीत होगी। और उसके बाद... मतलब वह बाद में कंक्रीट बातचीत उनसे भी तभी शुरू हो पाएगी इन लाइन में विचार समिति के कांटेक्स्ट में जब हम लोगों में कोई स्थिति आएगी यहां से बात करके फायदा कुछ हो सकता है, दोनों म्यूचुअल फायदा हो सकता है। Yeah. That's, all...

Naresh Kumar Sharma:

Girish, I have only a couple of things to add. One is that, as you mentioned, that there is a certain special, specific purpose. ha. So maybe that extract you can share. would be helpful. Not now, later. Okay. Second thing is that, Agi Samiti is... Not limiting with whom one carries a dialogue. I would reach out also. So even if Samiti is not very large. Samiti can have dialogue with everybody. Who is, willing to contribute? Like, we have been doing that. Third thing is that, as you mentioned, that in the structure itself, which is that 5 should be... were not members or non... who are known with JASTA members. So before it is constituted, I think that identification becomes a... Prerequisite, and then only you can still implement. Yeah, just two, three, point size is not earlier.

Girish Sahasrabudhe:

No, I mean, that is right, of course. See, we... the names from... non-Ashram people... Uh, all those names are known to us. But we don't know whether we can include them, whether they are willing to because it constitutes a certain responsibility, because otherwise that committee makes no sense. You see, it should meet, and it should transact some... I mean, some... something

useful. Uh, so it should come out in terms of, uh, uh, okay, discussions should be meaningful, and that it is helpful in taking the whole thing to wider circles. Uh, and also developing new things like Abhijit is saying. Uh, yeah, all these things are there, so it needs to be a serious attempt. So, when we ask people from outside, We have to make sure of that, uh... Yeah, and of course, the responsibility devolves on everybody, whether outside or inside... makes no difference. Every member then... has a certain responsibility in this regard. There is no number of meetings laid down. We can have any... number of meetings... we have... we may have online meetings more, maybe, I don't know. But it must be... it will be necessary to meet physically also. Say at least once, which we may combine with Trust meeting if we want to, if people find it, convenient... whatever, but those are all different things, I mean... The main thing is that they must be familiar with what it is for. And, uh, what is the responsibility which devolves on them? Well, that needs to be ensured... Uh, no, what I'm saying is, can we decide to constitute it... that we take a decision that we constitute a committee like this, And, uh, then, try to talk about the numbers. My own, uh, idea is that it can be as wide as possible, but then there can be differences there, there can be different opinions. So, uh, we may talk about these things today. See, the other things are obvious. I mean, we have to have people who take some responsibility. No doubt about that. This has to be done as a serious exercise. That way is... I mean, it has to be done as an extension of... the kind of things we have been doing in... Lokavidya Debates, as well as Gyan Vimarsh, and so we need people here who, uh, have, uh, been part of Bahujan Gyan Vimarsh. And Bahujan Gyan Samvad also. Those inputs must come to this committee. That is also necessary etc. So the names are written with all this in mind. We can't, uh, take a decision on all these things, but whatever we can take decision on, we should decide, I think. First, the need of the Committee. Second, the decision to constitute it. And third, if we can discuss numbers. Etc. So... That is my suggestion, of course, for the discussion, so... Suresh, can we take it forward along those lines, or...?

jksuresh:

I think so, I think... that would be the best way.

Sunil Sahasrabudhey:

Can we... I... I have a suggestion. for... in the context of Vichar Samiti. Can we, uh... somewhat, uh, center the discussion about the Vichar Samiti around around the knowledge-politics dialogue, that we want... you see, we have identified earlier... that this dialogue... centered on, or in the context of Bauddhik Satyagraha to be given shape, two in different languages in which we have the competence... like Maharashtra, Karnataka, Bengal, and, uh, some other places, maybe even Tamil Nadu. Uh, so, uh, Kerala, we can choose. We can, from wherever the people are, they can decide, and... we can... time frame, et cetera, will belong to a later this thing, once they come

to terms with it, or... Have a clear idea of what is going to be done. So, at one level, there is this. At another, we have talked about a global dialogue on knowledge-politics. Can the Vichar Samiti. Uh, also be... thought or discussed around some of these points, a concrete kind of, uh... reference point for the... which are submitted to be formed, to be activated, responsibilities to be distributed, etc. For example, one... One suggestion that can come that I can give is that... that a subset of the Vichar Samiti should take the responsibility of a global dialogue. So, something, and a subset of the Vichar Samiti should also take the dialogue for the Hindi region, as we already know, since it is going on. Other regions, uh, we will decide as we think appropriate. about it, uh, and how to do that, and so on. So, can we do this? Take a concrete reference... Uh, we think about it with a focus, uh, in organizational terms also. especially shortly here, I'm not saying that we decide this now. just adding my idea to the discussion that is going on.

Girish Sahasrabudhe:

No, as I said, it had the global, that is, uh... actually, one of the responsibilities is to take the thing to... the global fora, and national fora. That is, anyway, one of the general responsibilities. Now, exactly what is the concrete form of this will need to be discussed in the Samiti, and, uh, also, these responsibilities will have to devolve there, but they should devolve. That is certain, so, I mean... whether one can... immediately do this for linguistic regions, may not be very clear. And just note, whether we can form such... but we can aim at that... I mean, that also. It should be done, actually.

jksuresh:

Uh, assuming that, uh... Uh, the details will be worked out subsequently. Would it be alright to say that, uh... the number of people, uh, both from within Vidya Ashram and the people outside, इन दोनों की संख्या के बारे में अगर आज नहीं हो सकता तो both are decided in one of our Wednesday meetings, or whatever the Executive Committee thinks is right उसके अनुसार बात करते हुए उस संख्या को फिक्स कर सकते हैं और उसके बाद जब ये committee गठित हो जाय तब शायद ये जैसे बुद्धे बता रहे हैं, या आप बता रहे हैं कि समिति क्या करेगा यह सब उसमें बात करके तय हो सकता है या तो So, यदि यह ठीक लगता है तो आनेवाली एक-दो मीटिंग में हम क्या बात करना है ये फिक्स कर सकते है और उसके बाद आगे लेते हुए विषय को उसके बाद बहस के विषय तय कर सकते हैं... uh... यह हमारी सोच है.